अंतरा-शब्दशक्ति

अहसास अपनेपन का..

काव्य संग्रह

दिनेश कनोजे 'देहाती'

अहसास अपनेपन का

(काव्य संग्रह)

दिनेश ”देहाती“

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-84-1

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- दिनेश देहाती

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ehsas Apnepan Ka by Dinesh Dehati

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

'पल' पल्लवित हो कर आज और कल में परिवर्तित हो जाता है। जीवन यात्रा अनवरत आगत-विगत की परिभाषा गढ़ते हुए अपने अर्थ को ढूंढने का प्रयास करती है। इंसान, पारिवारिक और सामाजिक दायित्व निभाते- निभाते मन को भाने वाले दृश्य, क्षण, व्यवहार की स्मृतियों को संजोते हुए जब ठहरता है तो समय ही हाथ से फिसल जाता है। स्वयं से भी अपरिचित सा संवाद करता अतीत में झांकता है तो अनायास ही मुस्कान आ जाती है मुख मंडल पर। इत्मीनान और अहसास अपनेपन का सांसों के आवागमन को संयत कर आशान्वित कल की रचना के लिए प्रेरित करता है इंसान को।

संबंधों के धागे बहुत ही नाजुक होते हैं, हल्की सी चोट से भी आहत हो जाते हैं। आयु के ५३वें वर्ष में फिर कलम ने कुछ रचा। आदरणीया डॉ. प्रीति सुराना जी के आत्मीय आग्रह और उनके साहित्य के क्षेत्र में बहुआयामी विकास के लिए किये जा रहे सद्प्रयासों से अभिप्रेरित होकर समर्पित कर रहा हूं अपना चतुर्थ काव्य संग्रह "अहसास अपनेपन का"। कार्यालयीन दायित्व और मंचीय व्यस्तता के चलते नवसृजन कि गति कुछ शिथिल हो गई थी किन्तु आज 'अन्तरा-

शब्दशक्ति' के प्रोत्साहन से सफल हो पाया। समय की अनुकूलता के लिए मैं अपने परिवार और मातृसंस्था मॉयल लिमिटेड प्रबंधन का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। आपकी प्रतिक्रिया मुझे मेरे काव्य संग्रह के शीर्षक की अनुभूति प्रदान करेंगी इसी विश्वास के साथ.....

दिनेश कनोजे "देहाती"

अनुक्रमणिका

1.	अपना भारत-श्रेष्ठ भारत	7
2.	अहसास अपनेपन का	8
3.	हार-जीत	10
4.	लक्ष्य	11
5.	जंजाल	12
6.	आज की बात	13
7.	लहरें	14
8.	पर्यावरण	15
9.	भाषाओं का सामंजस्य	16
10.	बचपन	18
11.	धीरज	19
12.	गुरुजी	20
13.	गुरु	21
14.	रिश्ते	22

15.हदों को पार करें	23
16.मुखौटा	24
17.अच्छा लगे	24
18.घोटाले	25
19.सावधान	26
20.हवा का बहाव	27
21.कविता	28
22.कुछ मुक्तक	30
23.अमन लिख रहा हूँ	32

अपना भारत - श्रेष्ठ भारत

विश्व गुरू योग राज परम्परा का एवरेस्ट भारत।
गर्व से कहें हम अपना भारत-श्रेष्ट भारत।।
अपनी बोली-अपनी भाषा यहां,
मन का मानसून तन की आबोहवा,
ओडिसी, कत्थक, गिद्दा की रंगत,
तबले की ताल सारंगी की संगत,
सुपर कम्प्यूटर बोले तो नेक्स्ट भारत।
गर्व से कहें हम अपना भारत-श्रेष्ट भारत।।
सतरंगी धरा पर बहती नदी की धारा,
शीर्ष पर विराजे हिमालय हमारा,
हिंद सागर पखारता पांव नित नित,
स्वागत सत्कार अभिनंदन ही रीत,
समान सबके पर सर्वथा जेष्ठ भारत।
गर्व से कहें हम अपना भारत-श्रेष्ट भारत।।
वीर सपूतों की ये अनमोल धरोहर है,
इसमें शहादत है किसी का जौहर है।
कष्मीर से कन्याकुमारी तक है राज,
जय जवान जय किसान संग जय सुराज,
सरहद पर खतारा तो कैसे ले रेस्ट भारत।
गर्व से कहें हम अपना भारत-श्रेष्ट भारत।।
विष्वसरैया, रमन और भाभा के नाम,
सचिन, बिन्द्रा, राठौर और कई गुमनाम,
कलाम को सलाम तो विवेकानंद को नमन,
योग कला संस्कृति से महकता चमन,
कृषि और मृदा सम्पदा हर कण में है यथेष्ट भारत।
गर्व से कहें हम अपना भारत-श्रेष्ट भारत।।

अहसास अपनेपन का

लड़खड़ाते कदमों से चलना,
दूरियां नापने हरदम मचलना,
पिता की उंगली थामने के जतन का।
वो अहसास अपनेपन का।
मिलकर लेते अचार का चटकारा,
छोटी सी पीपरमेंट का भी बंटवारा,
कांच के कंचे में उलझकर,
निशाना साधते तन का।
वो अहसास अपनेपन का।
वो पाठषाला के कच्चे रस्ते,
कांधे पर उठाए किताब के बस्ते,
स्वर और व्यंजन में फंसे शिष्य,
गुरूजी की लंबी छड़ी से डरते मन का।
वो अहसास अपनेपन का।
श्यामपट पर सफेद चाक का लिखना,
मन की मलीनता का साफ दिखना,
कल की इमारत की नीव रखते है,
पास फेल के खेल की अजीब सी उलझन का।
वो अहसास अपनेपन का।
जवानी दहलीज पर अपने ही ठाठ,
सीधे चलने के लिये घर की डांट,

आसमां छूने की कोशिश करते हुये,
चंचल मन की बेलगाम उड़ती पतंग का।
वो अहसास अपनेपन का।
प्रेम-प्यार की अधूरी परिभाषा,
सब कुछ पा लेने की अभिलाषा,
दायित्वों का निर्वहन करने के लिये,
सुन्दर से सुदृढ़ जीवन के चमन का।
वो अहसास अपनेपन का।
सब संभालने की पारिवारिक सोच,
काँधों पर उठाये अपनों का बोझ,
दिषा देती दषा के गुलाम हम भी हैं
समीकरण बनता यहीं उत्थान पतन का।
वो अहसास अपनेपन का।
भोजन और भूख का सामंजस्य,
चुल्हे बर्तन का माँ ही जाने रहस्य,
पिता पसीने से भीगा ठंडक देता
बच्चों को देख याद करते बचपन का।
वो अहसास अपनेपन का।

हार-जीत

तुझसे जीतना चाहता हूँ हरदम,
किन्तु, तेरे हारे हुए मायूस चेहरे को
देखना नहीं चाहता मैं,
इसलिए हार जाता हूँ मैं।
अकेले पार जाना चाहता हूँ लहरों से
मगर
तेरे अकेले पार न पाने के भय से
उस पार नहीं जा पाता हूँ मैं।
तुझमें बहुत साहस है लड़ने का
मगर तेरे सारे के
सारे तीर मेंरे ही तरकश में है।
इसलिए, तेरा हर कदम साथ निभाता हूँ मैं।
मैं मैं हूँ, तू तू है,
मगर सफर में हम साथ है
क्योंकि हम दोनो की मंजिल एक है।
नर्म घास, गर्म रेत,
टूटते किनारे, तेज बहते धारे,
सारे के सारे अपनाता हूँ मैं,
तभी तो कहता हूँ
तू चल आगे-आगे, पीछे-पीछे आता हूँ मैं।
तेरा ही तो हूँ मैं सदा,
और सदा साथ साथ चलता हूँ मैं।

लक्ष्य

अंधेरा घना काला था,
मन में मगर उजाला था,
चल पड़ा लक्ष्य पा लिया,
सपना ही ऐसा पाला था।
ठोकरो ने राह् दी,
भय ने भी चाह् दी,
कदमों ने बल दी,
इरादों ने निगाह् दी।
मंजिल पे आते ही,
खुश न था पाते ही,
सरल में आनंद न था
संघर्ष के नाते ही।
श्वेद श्रम वेदना हो,
लक्ष्य गर भेदना हो,
दृढ़ता हो दृष्टि में
हृदय में संवेदना हो।

जंजाल

जिंदगी एक मायाजाल है,
फिर भी खुश है कमाल है।
धक-धक सुनायी देता है,
दिल है कि कदमताल है।
उम्र है कि सफरनामा है,
हिसाबी दिन महीने साल है।
हँसना रोना बोलना चुप्पी,
वाह बेहतरीन सुर ताल है।
कट जाए तो सीधा रास्ता,
फँस जाए तो जंजाल है।
कौन किसका तेरा मेंरा,
रिश्ते तरकस है ढाल है।
शब्दों में उलझा हूँ यकीनन,
क्या करूँ सबका खयाल है।।

आज की बात

देखने के बजाय गले मिल जाते,
मलाल हट जाता चेहरे खिल जाते।

आलोचना से हट समर्थन में आते,
एक से भले दो शक्तिवान हो जाते।

तुम श्रेष्ठ हो दुजे को कम मत आंको,
खामियाँ तुम में भी है गिरेबान झांको।

समर्पण ही अनुशरण भी करते,
अपने आराध्य सा आचरण भी करते।

सही और गलत का फैसला तुम्हारे हाथ,
किस से जोड़ो नाता किसका छोड़ो साथ।

लहरें

अथाह जल राशि में
आकंठ डूबे
छद्भ धरातल पर उतराता जल,
कल-कल किंतु दृष्टि छल,
यही तो है लहरों का संक्षिप्त परिचय।
मन भाता है
लहरों का तट के साथ
तटस्थ होना,
मिलना और फिर बिछड़ जाना।
मन भाता है,
पवन वेग से अनुबंध कर
उदिग्न होते निश्छल जल को देखना।
उस जल का आकांत और शांत होना।
इन लहरों का ठौर ना ठाँव,
न स्व रचित कोई प्रभाव।
फिर भी हम बड़े चाव से
उन लहरों को देखते हुए
आनंदित होते है,
आखिर क्यों आनंदित होते है। ।

पर्यावरण

हरियाली की चादर ओढ़े,
ये धरती इतरायें,
बोलो ये ख्वाब है या,
इतिहास की कथाएँ।
कागज पर वृक्षारोपण,
आकड़ों में फसले,
विडम्बना इस युग की,
प्रकृति तू भी हँस लें।
शंखनाद शिखर से,
पर्यावरण बचाव,
प्रयास शून्य रहे।
पारित कई प्रस्ताव,
आज जागो तुम
बच्चे बूढ़े जवानों,
अंधकार मय भविष्य है
यथास्थिति पहचानो ।
प्रयास हो सार्थक,
वसुन्धरा मुस्कुराये।
धुँआ, ध्वनि, धूल से,
पर्यावरण बचायें।

भाषाओं का सामंजस्य

कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है,
इस मूल मंत्र का अदभुत रहस्य है।
विविध जाति-सम्प्रदाय वर्णो में भी,
आज अनोखा भाषाओं का सामंजस्य है।।
आंध्रा का हरिकोटा, महाराष्ट्र का बाम्बे हाई,
काशी के बीएचयू ने सर्वप्रथम तकनिकी पढ़ाई।
सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने तमिलनाडु से आकर
शिक्षक दिवस की आज परम्परा चलाई,
तो शब्द कहाँ ठिठके, भाषा कहाँ लड़खड़ाई।
हिन्दी में वह तो संस्कृत में तस्य है।
आज अनोखा भाषाओं का सामंजस्य है।।
जन गण मन के रचियता थे बंगाली बाबू,
कर्नाटक के देवगौड़ा ने भी देश को किया काबू
गुजराती नरेन्द्र मोदी आज सिहांसन पर है
बंगाल के प्रणव मुखर्जी अब सबसे ऊपर है।
स्वाद संस्कृति विचार विविध परन्तु,
सवभौमिक सर्वव्याप्त शब्द संज्ञा विशेष है।
आज अनोखा भाषाओं का सामंजस्य है।।
अटल ने किया धमाका तो चमका राजस्थानी पोखरण,
लक्ष्य एक तो मन समझे सिर्फ विकास का व्याकरण।
मंगल यान की मनोकामना मलयाली मस्तिष्क से,

आज भारत आगे बढ़ गया सम्पूर्ण विश्व से।।

भाषा, भारत की भाग्य विधाता नहीं साधन है।

बुद्धि बल शांति प्रयास में भाषा का ही योगदान है।
चौदह भाषा छः सौ बोलि फिर भी हिन्दी का राज है।
विश्व विजेता संस्कृति रक्षक भारत भू का समाज है।
इस प्रगति का तो अद्‌भुत रहस्य है।
सचमुच भारत में भाषाओं का सामंजस्य है।।

बचपन

तुम जब थकान के अधीन हो,
वातावरण भी जरा गमगीन हो,
बेशक उम्र गवाही न देती हो,
एक बार बचपन याद कर लेना
माँ की गोद में सिर रख लेना।

हिमालय सी ऊँचाई पा ली हो,
मन मगर बिल्कूल खाली हो,
जमाना सीखे तुमसे तुम नादान बन
एक बार बचपन याद कर लेना
माँ से जरूर सीख लेना।

माँ ना हो तो बेटी को माँ बना लेना,
बचपन माँ बिन अधूरा है सून लेना,
संवारती बिखरे बाल सहलाती वो गाल,
वेशक समय अनुमति न दे ना सही,
बेपरवाह तुम बचपन की अंगड़ाई ले लेना।

धीरज

धीरज बड़ा
जब माँ अंगीठी पर रोटियाँ सेंकती थी।
बड़े लाड़ से अपने लाड़ले को देखती थी।।

धीरज बड़ा जब पिताजी पपीता छिलते थे।
तैयार खाने को हमें टुकड़ों में मिलते थे।।
धीरज बड़ा जब
दादी गाल दबाकर बाल संवारती थी।
काजल लगा चुम्बन ले प्यार से पुचकारती थी।।

धरीज बड़ा
जब पाठशाला में जनगणमन गाते थे।
गुरूजी का हर आदेश दिल से अपनाते थे।।
धीरज बड़ा
जब बहन माथे कुमकुम तिलक लगाती थी।
कलाई हमारी रक्षाबंधन से सजाती थी।।

धीरज बड़ा
जब माँ परदेश जाने से पहले लेती बलैया।
उस धीरज का तो जवाब ही नहीं है मेंरे भैया।।
शनै: शनै: वह बचपन का क्रम टूट गया।
क्या पाया पता नहीं मगर धीरज छूट गया।।

गुरूजी

मन सबका पढ़ते गुरूजी।
कल का इंसान गढ़ते गुरूजी।।

सख्त कभी सरल स्वभाव।
सब को लेकर बढ़ते गुरूजी।।

शिष्य को ऊँचा देखना चाहते।
धरती पर खुद चलते गुरूजी।।

लड़ते बच्चों को खूब समझाते।
बच्चों के लिए खूद लड़ते गुरूजी।।

पाठशाला हर गाँव में देहाती।
देश का भविष्य गढ़ते गुरूजी।।

गुरू

गुरू होना कठीन है बहुत,
शिष्य बन कर जीना पड़ता है।
हर पल कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है।
आचार-व्यवहार-संस्कार
संयम-शिष्टाचार का सौ प्रतिशत अनुपालन।
कपड़ों की सिलवटें माथे पर सिलवटें ला देती है।
प्रस्तुत होना पड़ता है सरल-सौम्य,
कही शिष्य की सोच पर सिलवटें न पड़ जाये
बहुत कठिन होता है गुरू होना।
पढ़ना पड़ता है पढ़ाने से पहले,
अंधकार में प्रकाश का प्रवेश अकस्मात नहीं हो सकता
शनै:-शनै: प्रक्रिया होती है इसकी
धैर्य रखना पड़ता है।
सार्थक प्रतिक्रिया के लिए
कही चकाचौंध दिग्भ्रमित न कर दे।
सम्पूर्ण परिश्रम, साधना परोपकार की श्रेष्ठता है
किन्तु शिष्य का सविनय अभिवादन
असीमित ऊर्जा का संचार कर देता है।
मिट जाती है थकान सारी।
एक अपेक्षा यही होती है गुरू की
जैसे कि माँ ताकती है घिसटते बच्चे के
खड़े होने के क्षणों को उसे आनंद की अतिरेक अनुभूमि प्राप्त होती है।
ठीक वैसे ही गुरू भी आनंदित होता है अपने शिष्य की सफलता पर।

रिश्ते

घर की दिवार में दरारें,
छप्पर मन के रिसते रहे।
कौन किसका पर सब मौन,
पहले जैसे कहाँ रिश्ते रहे।
समर्पण त्याग शब्द बने,
अहसास तो मर ही गये।
स्वार्थ सर्वोपरि सौदागर सब,
भावनाशून्य तन कर ही गये।
अनुराग अपनापन बेमानी,
अपनी ढपली अपना राग।
साँसों का जीवन भरण बस,
रिश्ते बेघर हुए लेमन बैराग।
बा पके कांधे पर बैठा बेटा,
मिठास रिश्तों की कब तक।
चार कांधो को तरस गया,
अंत दुःखद दुखी रब तक।
किलकारियाँ बचपन की,
पचपन की सिसकियाँ।
जी लो रिश्तों का मान रख,
रिश्ते बनें अब तो रिसकियाँ।
जिंदगी की अजीब कशमकश में फंसे हम है,
रोने की वजह बहुत हंसने के बहाने कम है
प्रेम पाती सब समझाती पर समझे न कौन।
प्रेम के प्रेम से समझो तो जग बैरी न कौन।

हदों को पार करें

आओ आज नई शक्ल अख्तियार करें।
हद बनाए खुद ही और हदों को पार करे।

सात पुश्तें भी चुका न सके कर्ज बाप का,
मस्ती मारे और लोगों से इतना उधार करें।

सूरज को ढक दे जुगनू की पूँछ मरोड़ दे,
कारनामों की कालिख से जग को बीमार करे।

थू-थू करते लोगों के मुख भी थक जायें,
घटियापन ऐसा कि जनता भी धिक्कार करें।

डमरू से डराये डफली को हथकंडे तोडू हो,
डीजे पर डांडिया बीच सड़क पर डंडार करें।

गड़बड़ सड़बड़ कर घोटालों के राजा बने,
चकरी घुमाए ऐसी की नेता भी नमस्कार करें।

मुखौटा

चेहरे पे चेहरा लगाकर चल रहे है लोग,
खुद में खुद को ही तलाश रहे हैं लोग।
श्वेत श्याम तस्वीरों का दौर लद गया अब,
मुख पे मुखौटा लगाकर चल रहें है लोग।

नकल और नकलचियों का नाम है जमाने में।
असलियत से ही असल में डर रहें है लोग।
बिक गये सब दिखाने में दिखाने वाले आदमी,
देखने दिखाने के नाम पर ही मर रहें है लोग।

अच्छा लगे

आज मैं को हम में बदल लो तो अच्छा लगे,
खुषी में गम को बदल लो तो अच्छा लगे।
जरूरते तो मुंह चिड़ाती है अक्सर आदमी का,
ज्यादा को कम में बदल लो तो अच्छा लगे।

वो भी साथ साथ चलेंगे तुम्हारे ”देहाती“,
कठोर को नम में बदल लो तो अच्छा लगे।
तुम भी जीत लोगे हर जंग जिंदगी की,
इरादा को दम में बदल लो तो अच्छा लगे।।

घोटाले

किससे मिलाए हाथ किस को टाले,
घर घर दर दर हर शहर घोटाले।

ईमान का सीना छलनी पाँव में छाले,
बेईमानी की ईमारत के दस दस माले।

मुफलिसी में उसने बेचे दरवाजे तक,
रइसों के घर देखो ताले पर ताले।

खुदा भी उस माँ की बेबसी पर रोया था,
भूखे बच्चों को बहलाने जिसने पत्थर उबाले।

उनकी जूठन भी गरीबों की खुराक से ज्यादा है,
देहाती इनका मुंह चिढ़ाते है रोज निवाले।

सावधान

रक्षा बंधन का त्यौहार आ रहा है,
राखी मत बंधवाना
अगर मन में अपनी और दूसरों की बहन
के प्रति सम्मान नहीं है।
खुद को भाई होने का अभिमान नहीं है।
बहन की आकांक्षाओं
अपेक्षाओं का तार मत तोड़ना
खुद पर भरोसा न हो तो
ये रिश्ता मत जोड़ना।
ये रिश्ता तुमसे
तुम्हारा स्वाभिमान मागता है,
हर समर्पण
सच्चा बलिदान मागता है।
स्वयं कर सको गर
अपने विश्वास का अभिनंदन,
लो स्वागत करने आ रहा है
भाई-बहन का त्यौहार
रक्षा बंधन।।

हवा का बहाव

क्यों विपरीत है हवा का बहाव,
अनमने से ठिकाने औंधे पड़े पड़ाव।

प्रकृति से विद्रोह चले रेत पर नाव,
गगन सिमटा मुठ्ठी में सागर पर ठहरे पाँव।

विराट विष्व की परिधी बांधने लगे दांव,
मानव शत्रु मानव का करना घाव पर घाव।

सिसक रही धरती अब आकाश भी सहम गया,
नाते टूटे ममता छुटी, दिलों से रहम गया।

पैतरा नहीं चाल चलन बन गया वहशीपन,
हत्यारों की बस्ती में कहाँ चैन कहाँ अमन।

वक्त की धोखा धड़ी है या विध्वंस का प्रभाव,
क्यों विपरीत है आज हवा का बहाव।

कविता

सरस्वती का साज है कविता।
हिन्दी साहित्य का ताज है कविता।

कवियों की बोली है कविता।
कहीं हँसी ठिठोली है कविता।
बच्चों की किलकारी है कविता।
बगियों की फुलवारी है कविता।

वीरों की तलवार है कविता।
गोलियों की बौछार है कविता।
साथी भी सहचरी है कविता।
हमेंशा ही रसभरी है कविता।

दर्द पर मरहम है कविता।
कभी कठोर कभी नम है कविता।
रसिकों की प्यास है कविता।
अंजुरी पर आस है कविता।

देश की खुशहाली है कविता।
सृजन सरिता हरियाली है कविता।

कभी हँसाती कभी रूलाती है कविता।
बिछड़ों को आपस में मिलाती है कविता।

ये न समझो कि खेल है कविता।
साहित्य दीपक का तेल है कविता।
प्रकृति का प्यार है कविता।
माता का दुलार है कविता।

तुलसी मीरा की तान है कविता।
बंकिम, टैगोर का गान है कविता।
रहीम, कबीर का बखान है कविता।
गुप्त, निराला की पहचान है कविता।

सुभद्रा, महादेवी की डगर है कविता।
काका, शैल का सफर है कविता।
शब्दों की ईट का निर्माण है कविता।
सदियों के सफर का प्रमाण है कविता।

कुछ मुक्तक

सहमत था तुमसे, जब तक जन्नत नसीब थी,
जहन्नुम बन गयी जिंदगी असहमति जताने पर।
गैरों में शुमार था तुम्हारा तो चैन से था मैं।
आफत मोल ले लिया तुम्हे अपना बनाने पर।1।

--------$$$--------

लो षुरू हो गये फिर यादों के सिलसिले,
याद आया पहली बार हम कब मिले।
वो शरमाना और ठिठक जाना आपका,
बड़ी मुश्किल में थे तुम जब लब हिले।2।

---------$$$$-----------

ठंडी हवा में भी पसीने से तरबतर गीले,
याद आया कुछ तुम शर्मिले हम हठीले।
होली में घूंघट ने की थे बेवफाई याद है?
हँस रहे थे टेसू के संग पलाश पीले पीले।3।

---------$$$$-----------

चले चलो कुछ नया इस बार करें,
हद बनाएं खुद ही हदों को पार करें।
रुसवाईयाँ जमाने की मिलने नहीं देगी,
दिल से मोहब्बत का बस इजहार करें।4।

---------$$$$-----------

मंजिल अपनी पाने का वादा करो,
लक्ष्य कठिन है मेंहनत ज्यादा करों।
लोहा भी सोना होता है पारस स्पर्श से,
तुम कोहिनूर बन दिखओगे वादा करो।5।

---------$$$$-----------

किसी को दिल से चाहना बुरी बात है क्या,
अपनापन अपनो से मांगना बुरी बात है क्या?
लहरों ने तोड़ दी है अपनी हद कब से देहाती,
प्यार में सीमाएं लांघना बुरी बात है क्या?6।

---------$$$$----------

खरपतवार ज्यादा हो तो फसल खराब होने का डर है
लापरवाह रहे ब्याज से तो असल खराब होने का डर है
बचाकर रखना बुजुर्गों का मान सम्मान घर में “देहाती”
बच्चों को नहीं दिये तो नसल खराब होने का डर है।7।

---------$$$$-----------

सर्व धर्म समभाव हमारी संस्कृति की पहचान है।
विविधता में एकता पर सहमति ही हिन्दुस्तान है।
बोली भाषा धर्म संग जन-जन ने भी रखा सामजस्य
तीज त्यौहार राग रंग सब संग ये देश तब ही महान है।8।

---------$$$$-----------

अमन लिख रहा हूँ

हादसों के घर दहशतों का आवागमन लिख रहा हूँ।
रक्त रंजित कागजों पर अब अमन लिख रहा हूँ।

असम बिहार हो या कश्मीर के किस्से,
घर-घर, गाँव-गाँव शहर के किस्से,
बन्दूक की नोंक से याचना करती है ज़िन्दगी
भीख किससे दुआ माँगे किससे
जात पात भाषा धर्म से पस्त वतन लिख रहा हूँ।

रक्त रंजित कागजों पर अब अमन लिख रहा हूँ।
हथियारों की घुड़दौड़ युद्ध के धमाके सनासन
खूनी खेल दरिन्दों का होता मानवीय अवमूल्यन
तन्दूर में तड़पती नारी भला कब जागेगी
दहेज लोलुप सास ससुर का करने हनन।
जाग उठो फूल सी नारी तुम्हें अगन लिख रहा हूँ।।

भ्रष्टाचार भर गया भगवन भारत भर भारी
बिना दान दक्षिणा दे दूर न हो बेकारी
रोटी की तलाश करते खुद पापड़ हो गये
दौलत से हो रहा दरिद्रों का दमन लिख रहा हूँ।
रक्त रंजित कागजों पर अब अमन लिख रहा हूँ।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - दिनेश कनोजे

जन्म - 10.10.1966, सावंगी (बालाघाट) म.प्र.

पिता - श्री रामचंद कनोजे

माता - श्रीमती अंजना देवी कनोजे

पत्नि - श्रीमती पुष्पा कनोजे

शिक्षा - बी.कॉम., एम.ए. (समाजशास्त्र), आई.टी.आई., डी.आई.आर. पी.एम., कला शिरोमणी।

पता - 47, न्यू कॉलोनी, तिरोड़ी, जिला- बालाघाट (म.प्र.)

मो. - 9893578322

विधा - छंद मुक्त कविताएं, गज़ल, गीत एवं हास्य व्यंग्य रचनाएं, प्रखर प्रवक्ता।

कार्यक्षेत्र - चार्ज हैंड मेकेनिकल (मॉयल लिमिटेड तिरोड़ी),
अध्यक्ष- साहित्य संगम, लोकप्रिय हास्य व्यंग्य कवि
प्रचार मंत्री अखिल भारतीय विश्वकर्मा संघठन, नागपुर।

प्रकाशन -1. सृजन की बेला है (काव्य संग्रह)
2. मीठा समंदर (काव्य संग्रह)
40 से अधिक सांझा संग्रह में प्रकाशन

सम्मान - शताब्दी रत्न 2001, राष्ट्रीय रामनरेश त्रिपाठी सम्मान 2003, डॉ अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड। ग्रेट अचीवर अवार्ड, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, साहित्य कुसुमाकर सम्मान, साहित्य पुरोधा सम्मान सहित 40 से अधिक सम्मान।
- राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन 2000 में निरंतर सहभागिता, अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी सम्मेलन 2001 लखनऊ, 2010 हैदराबाद, 2013 कोलम्बो, 2018 सिंगापुर।

प्रसारण - वाह वाह सब टी.वी., गुदगुदी ई.टी.वी., काव्यांजली दूरदर्शन मध्यप्रदेश, पारस टी.वी. एवं आकाशवाणी बालाघाट से कविताओं का प्रसारण।
- 750 अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ एवं 270 से अधिक सम्मेलनों का मंच संचालन।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-84-1
मूल्य- 55/-